HISTORY - Part-III

POONAM CHOUDHURY
chief Coordinator
History (N.O.U.)

(संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास (1776 - 1945))
B.A. Hons. Paper - VIII

Q) अमेरिकी स्वतंत्रता - संग्राम के कारणों का वर्णन करें।

Ans.) विश्व इतिहास में अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का अपना अलग महत्व है। इस युगांतकारी घटना के निम्नलिखित कारण थे।

I दूरवर्ती कारण

1) वाणिज्य नीति - उत्तरी अमेरिका में इंगलैंड के तेरह उपनिवेश सेंट लारेंस से जार्जिया के तट तक फैले हुए थे। इन उपनिवेशों को विभिन्न अंग्रेज प्रवासियों ने भिन्न - भिन्न समय पर स्थापित किया था। इंगलैंड उन्हें अपनी सम्पत्ति समझता था। वे इंगलैंड के हेतु प्रचुर मात्रा में धन के उत्पादन के साधन मात्र समझे जाते थे।

इंगलैंड की प्रारंभिक वाणिज्य - नीति निम्नलिखित कानूनों पर आधारित थी -

(i) नौ-वहन कानून - ब्रिटिश - व्यापार में वृद्धि और अधिक महसूल कमाने के लिये ब्रिटेन की संसद ने 1651 ई० में 'नौ - वाहन कानून' पारित किया। इस कानून के अनुसार निम्नलिखित व्यवस्था हुई -

a) ग्रेट ब्रिटेन तथा उसके उपनिवेशों के मध्य अथवा उपनिवेशों और यूरोप के अन्य देशों के मध्य ब्रिटिश निर्मित जहाजों में ही माल ले जाया जायेगा।

Scanned with CamScanner

पत्रांक .... (Pg. 2) दिनांक ....

b) इन जहाजों को केवल ब्रिटिश नाविक ही चला सकते थे।

c) उपनिवेश वाले अपना माल अंग्रेजी जहाजों पर ही बाहर भेज सकते थे।

उपरोक्त कानून से उपनिवेशों की काफी आर्थिक क्षति होती थी, क्योंकि उनके व्यापार की स्वतंत्रता नष्ट हो गई थी। ऐसे बंधनों के विरुद्ध उपनिवेशवासियों द्वारा अपनी आवाज उठाना अवश्यंभावी था। उनकी यह नौवहन कानून विरोधी आवाज अमेरिका के स्वतंत्रता-संग्राम में परिणित हो गई।

(ii) व्यापार-संबंधी कानून - ब्रिटिश संसद ने व्यापार संबंधी कानून बनाकर यह निश्चित कर दिया कि उपनिवेशों को कौन-सी वस्तुओं का व्यापार किस प्रकार किया जायेगा।

a) कुछ वस्तुएँ जैसे चावल, लकड़ी, रोआँ, तम्बाकू, लोहा आदि केवल ब्रिटेन ही भेजे जा सकते थे। दूसरी जगह नहीं।

b) अमेरिकी व्यापारियों को अपनी अच्छी वस्तुएँ - ब्रिटेन के सौदागरों के हाथ वहाँ के प्रचलित मूल्य पर बेचनी पड़ती थीं।

c) अमेरिकी व्यापार अपना उत्पादन हालैंड, फ्रांस या अन्य देशों के बाजार में, जहाँ उन्हें अधिक दाम प्राप्त हो सकता था, नहीं बेच सकते थे।

d) दक्षिणी उपनिवेशवासी जो तम्बाकू उत्पन्न करते थे, व्यापार संबंधी कानून से विशेष रूप से प्रभावित थे, वे इंगलैंड के ऋणी थे, अतएव उन्हें अपनी वस्तुओं को इंगलैंड के सौदागरों के हाथों बेचना पड़ता था। व्यापार संबंधी कुछ कानूनों के अनुसार न तो अमेरिका का माल सीधे यूरोप जा सकता था और न यूरोप का माल सीधे अमेरिका आ सकता था। इन्हें ग्रेट-ब्रिटेन के सौदागरों के हाथ से गुजरना पड़ता था।

Scanned with CamScanner

e) अमेरिका में भी गैर – ब्रिटिश उपनिवेशों के साथ व्यापार करना प्रतिबंधित था।

f) 1773 ई० में पारित कानून के अनुसार उपनिवेशवासी गैर ब्रिटिश से बिना टैक्स दिये व्यापार नहीं कर सकते थे।

(iii) आयात – निर्यात संबंधी कानून – ब्रिटिश संसद ने अमेरिका के उद्योग – धंधों को नष्ट करने के लिए आयात – निर्यात संबंधी कुछ कानून पास किये। कतिपय कानून निम्न प्रकार थे –

a) 1669 के कानून द्वारा यह निश्चित किया गया कि अमेरिका में निर्मित ऊनी माल का निर्यात दूसरे देशों को नहीं होगा।

b) 1732 ई० में उपनिवेशों से अमेरिका अथवा बाहर टोप भेजने का अधिकार छीन लिया गया।

c) 1750 ई० में कानून के अनुसार उपनिवेशवासी लोहे का छोटे-मोटे माल भी तैयार नहीं कर सकते थे। इस प्रकार अमेरिका का ऊन और लोहे का व्यापार ठप्पकर दिया गया।

(iv) ब्रिटिश नीति – आरंभ से ही ब्रिटेन की अमेरिका के प्रति यह नीति रही कि अमेरिकी उपनिवेशवासियों की आर्थिक स्थिति कमजोर रहे जिससे कि आर्थिक दृष्टिकोण से कमजोर उपनिवेशवासी कभी सशक्त बनकर ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध न कर सकें। पर ब्रिटेन की यह नीति असफल रही। अमेरिकनों को 'रोटी ही काफी नहीं है' कहावत पर पूर्ण विश्वास था। वे स्वतंत्रता के पुजारी थे। ब्रिटेन द्वारा लगाये गये अनेक आर्थिक प्रतिबंधों को तोड़ने तथा अपनी आर्थिक व्यवस्था को दृढ़ बनाने के लिये उन्होंने स्वतंत्रता – संग्राम को अनिवार्य समझा। इस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम के पीछे आर्थिक कारणों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

Scanned with CamScanner

2) राजनीतिक कारण — अधिकांश उपनिवेशों की स्थापना
राजनीतिक कारणों से की गयी थी। अधिकतर उपनिवेशों की
स्थापना उन अंग्रेजों के द्वारा की गयी थी, जो इंगलैंड के शासन
से भयभीत होकर भाग आये थे। पर कालांतर में सभी उपनि-
वेशों पर इंगलैंड का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। इन उपनि-
वेशों को पर्याप्त मात्रा में स्वायत्त शासन प्राप्त था। अनेक
उपनिवेशों की अपनी विधान सभा थी। विधान सभा में सदस्य
अपने अपने उपनिवेशों के मामलों पर विचार विमर्श करते
थे। पर यह स्वायत्त शासन स्वतंत्र नहीं था। उपनिवेशों के
गवर्नर और उनकी कौंसिल के सदस्य इंगलैंड के राजा द्वारा
मनोनीत किये जाते थे। वे इंगलैंड के राजा के प्रति उत्तरदायी
थे। गवर्नर को निषेधाधिकार भी प्राप्त था। उपनिवेशवा-
सियों की व्यवस्थापिका सभा और इंगलैंड की कार्यकारिणी
सभा के मध्य संघर्ष रहा करता था।
उपनिवेश अपनी व्यवस्थापिका सभा को अपने क्षेत्र में
प्रधान मानते थे। इसके विपरीत इंगलैंड उन्हें एक अधीनस्थ
निकाय मानता था। इंगलैंड वासियों का तर्क था कि उपनिवेशों
में शासन करने की योग्यता नहीं है। डा० जॉनसन ने कहा
था, "हम लोग बछड़े को हल में नहीं लगाते हैं, हम लोग तब
तक प्रतीक्षा करते हैं, जब तक वह बैल नहीं बन जाता है।" प्रचलित
नियमों के अनुसार उपनिवेशवासी बड़े-बड़े सरकारी पदों पर
नियुक्त नहीं किए जा सकते थे। अतः उपनिवेशवासी एक
ऐसी राजनीतिक व्यवस्था के संगठन की इच्छा कर रहे
थे जो उन्हें राजनीतिक अधिकार दे सके। यह कार्य स्वतंत्रता
संग्राम द्वारा ही संभव था।

3) मध्यम वर्ग का उदय — मध्यम वर्ग के उदय ने अमेरिकी
स्वतंत्रता-संग्राम में विशेष योगदान दिया। अमेरिका में
बहुसंख्यक उपनिवेशवासी मध्यम और निम्न वर्ग के लोग
थे। वे चर्च के अत्याचार से भयभीत होकर प्राण रक्षा हेतु
यूरोप से अमेरिका भाग आए थे। अपने उपनिवेशों की
रक्षा करने के लिए ब्रिटेन को विभिन्न राष्ट्रों, जैसे फ्रांस, आस्ट्रि-
आस्ट्रिया, स्पेन आदि देशों से 1689 ई० से लेकर 1763 ई०

की अवधि में अनेक युद्ध लड़ने पड़े। युद्ध में फँसे रहने के कारण इंगलैंड इन उपनिवेशों में व्यापार संबन्धी कानून निरंतर लागू नहीं कर सकता था। अतएव उपनिवेशवासियों ने उपयुक्त अवसर पाकर इनकी अवहेलना करके अपने अपने उद्योग-धंधों और व्यापार में आशातीत वृद्धि की तथा अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करली थी।

अमेरिकी स्वतंत्रता-संग्राम के समय उपनिवेशवासी मध्यम वर्ग का सामाजिक और बौद्धिक रूप से पर्याप्त विकास हो चुका था। वे आरंभ से ही स्वतंत्र विचारों के थे। उनमें अपनी एक सरकार, अपना संविधान और अपनी शासन-व्यवस्था तैयार करने की भावना पहले से ही विद्यमान थी। इन्हें अपनी सैनिक क्षमता एवं रणकौशल भली-भाँति ज्ञात था क्योंकि कभी-कभी इंगलैंड अपने उपनिवेशवासियों की सहायता से युद्ध लड़ा करता था इससे उपनिवेशवासियों को अपनी सैनिक क्षमता का वास्तविक अनुमान था। सप्तवर्षीय युद्ध (1756-1763 ई) ने उनके इस आत्मविश्वास में अधिक वृद्धि कर दी थी।

4) सप्तवर्षीय युद्ध —(1757-1763) के परिणाम — सप्तवर्षीय युद्ध ने अमेरिका के स्वतंत्रता-संग्राम को अवश्यम्भावी बना दिया। इसमें एक ओर इंगलैंड तथा प्रशा थे और दूसरी ओर आस्ट्रिया। फ्रांस, रूस, स्वीडन एवं सेवाय थे। यह युद्ध 7 वर्ष तक लड़े जाने के पश्चात 1763 में पेरिस की सन्धि के साथ समाप्त हुआ। इसके अंत होते ही अमेरिका में फ्रांसीसी संकट (French Menace) का अंत हो गया। इस समय कनाडा और लुईसियाना में फ्रांसीसी उपनिवेश थे। उन्हें निरंतर फ्रांस का भय बना रहता था। भय का निवारण करने हेतु वे इंगलैंड की सहायता पर आश्रित थे। वस्तुतः वे अकेले फ्रांस का विरोध नहीं कर सकते थे। सप्तवर्षीय युद्ध में इंगलैंड को सफलता मिली तथा फ्रांस की घोर पराजय हुई। इससे

Scanned with CamScanner

पत्रांक .... Page – 6 दिनांक ....

अमेरिकी उपनिवेशों पर भी इंग्लैंड का अधिकार हो गया। इस प्रकार उत्तरी अमेरिका से फ्रांस का भय पूर्णतया समाप्त हो गया। वे अब इंग्लैंड के विरुद्ध युद्ध करने को तैयार हो गये। दूसरे सप्तवर्षीय युद्ध संचालन के लिये बहुत सी चीजों की मांग बढ़ गई। इससे किसान और मजदूर भी लाभान्वित हुए। उपनिवेशों की आर्थिक व्यवस्था में दृढ़ता आई, किन्तु युद्ध का अंत होते ही कारोबार में मंदी आ गयी। इसके कारण लोगों में घोर निराशा और असंतोष की आग भड़क उठी। इधर इंग्लैंड ने उन पर टैक्स लगाने का प्रयत्न किया। परिणामतः उपनिवेशवासियों की क्रोधाग्नि भड़क उठी।

II तात्कालिक कारण

तृतीय जार्ज (1760 – 1820 ई०) ने इंग्लैंड में अपना व्यक्तिगत शासन स्थापित किया। धन एकत्र करने के उद्देश्य से उसके विभिन्न प्रधान मंत्रियों ने अमेरिकी उपनिवेशों पर विभिन्न प्रकार के कानूनों को लादने का प्रयत्न किया। इसने अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम को अवश्यम्भावी बना दिया। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के तात्कालिक कारण निम्न प्रकार थे –

1) प्रधानमंत्री जार्ज ग्रेनविल के कार्य – प्रधानमंत्री जार्ज ग्रेनविल के निम्नलिखित चार कार्यों ने इस युद्ध को अपरिहार्य कर दिया।

a) चोरी बाजारी के विरुद्ध कठोर कदम (Strict Steps Against Black Marketing) जब ग्रेनविल को यह मालूम हुआ कि चोर बाजारी के कारण अमेरिकी उपनिवेशों से ब्रिटेन को प्रतिवर्ष केवल दो हजार पौंड की आय होती है, अधिक नहीं तो उसने चोर बाजारी को रोकने का पूरा प्रयास किया। अभियुक्ता को दण्डित करने हेतु एडमिरल्टी कोर्ट की स्थापना की गई। मजिस्ट्रेटों को यह अधिकार दिया गया कि वे चोर बाजारी का माल पकड़ने के लिए लोगों के घरों की तलाशी लें। इससे उपनिवेशवासी क्रुद्ध हो गये।

Scanned with CamScanner

b) शीरा कानून (Molasses Act) - 1733 ई० में शीरा कानून पास हुआ था। फ्रांसीसी द्वीप समूह में ब्रिटिश द्वीप समूह की अपेक्षा शीरा सस्ता मिलता था। अतएव अमेरिकी उपनिवेश फ्रांसीसी द्वीप समूह से ही शीरा मंगवाते थे। 1733 ई० में प्रधानमंत्री लार्ड ग्रेनविल की सरकार द्वारा शीरा कानून पास कर शीरा आयात पर बहुत अधिक चुंगी लगा दी गयी। चुंगी लगाने और इसकी वसूली करने में बड़ी सतर्कता और सावधानी प्रयुक्त की गयी। उपनिवेशवासी इस प्रकार की व्यवस्था एवं प्रबंध से खीझ गये वे इसे अपने अधिकारों तथा व्यवसाय में अनुचित हस्तक्षेप मानते थे।

c) प्रदेशों की नवीन व्यवस्थाएं (New Arrangement of Territories) - इंगलैंड ने फ्रांस को पराजित कर उसके मिसीसिपी नदी के पूर्व के प्रदेशों में भी हस्तक्षेप किया। अंग्रेज और उपनिवेशवासी दोनों ही उसे अपनी सम्पत्ति समझते थे। अमेरिकी उपनिवेशों की अर्थ-व्यवस्था में मंदी आने पर बहुत से किसानों और पादरियों को अपनी जीविका से हाथ धोना पड़ा था। वे नयी जमीन की खोज में पश्चिम की ओर बढ़ चले। 1763 ई० में ग्रेनविल ने एक घोषणा के अनुसार इन प्रदेशों को आदिवासियों के लिये सुरक्षित रखा। ग्रेनविल का उपनिवेशवासियों को पश्चिम की ओर बढ़ने से रोकने का कार्य ठीक नहीं था। उपनिवेशवासियों ने इसका विरोध किया।

d) टिकट अधिनियम (Stamp Act) - सप्तवर्षीय युद्ध में इंगलैंड ने अपार धन व्यय किया। परिणामतः उसका राष्ट्रीय ऋण दुगुना हो गया था। इंगलैंड इन उपनिवेशवासियों से बड़ी कड़ाई से पैसा वसूल कर रहा था। ग्रेनविल का मत था कि अमेरिका में कम से कम दस हजार की एक स्थायी सेना रखना अत्यंत आवश्यक है। इस सेना का एक-तिहाई व्यय उपनिवेशवासी दें। इंगलैंड की संसद ने 1765 ई० में टिकट अधिनियम पास किया। इस कानून के अनुसार अखबार, पुस्तिकायें और कानूनी कागजातों के वैध होने के लिये रसीदी टिकट लगाना आवश्यक कर दिया गया। उपनिवेशवासियों ने इसका घोर विरोध करना आरंभ कर दिया। नौ उपनिवेशों के प्रतिनिधियों ने न्यूयार्क की कांग्रेस में एकत्र होकर टिकट अधिनियम रद्द किये जाने की माँग की।

Scanned with CamScanner

Page 8

2) रौकिंगघम के कार्य – ग्रेनविल के बाद रौकिंघम ने प्रधानमंत्री बनने पर यह देखा कि विकट अधिनियम ने स्थिति को गंभीर कर दिया है तथा दंगे होने शुरु हो गये हैं। अतः उसने भी उपनिवेशों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत स्टैम्प एक्ट को रद्द करने की मांग को स्वीकार किया इस प्रकार शीघ्र ही विकट अधिनियम (Declaratory Act) पास करवा कर यह दावा किया कि ब्रिटिश संसद की उपनिवेशों पर कर संबंधी एवं अन्य अधिनियमों को बनाने का पूर्ण अधिकार है। इस अधिकार का दावा करने का अर्थ था उपनिवेशियों की स्वतंत्रता पर ठेस लगाना। यह आघात अमेरिकावासियों को कदापि स्वीकार्य न था।

3) आयात चुंगी अधिनियम (custom Act) – बड़े पिट के प्रधान मंत्रित्व में चार्ल्स टाउनशेंड कोषाध्यक्ष था। पिट या चैथम का अर्ल (Earl of Chatham) गठिया रोग से पीड़ित होने के कारण शासन में विशेष दिलचस्पी नहीं ले पाता था। परिणाम यह हुआ कि टाउनशेंड देश के शासन में हाथ बटाने लगा। उसने कांच, सीसा एवं कागज पर आयात चुंगी लगा दी। उसका यह अनुमान था कि इससे प्रतिवर्ष करीब चालीस हजार पौंड की आय होगी। उपनिवेशवासियों को ऐसा प्रतीत हुआ कि यह व्यवस्था उनके स्वायत्त शासन को समाप्त कर देगी।

4) चाय पर चुंगी – सन् 1770 में लार्ड नार्थ ने प्रधानमंत्री बनकर सीसा, कागज, रंग आदि से चुंगी हटा दी। पर उसने चाय पर चुंगी रहने दी। ऐसा इसलिए किया गया ताकि वह यह दिखा सके कि इंगलैंड को उपनिवेशों पर कर लगाने का अधिकार है। उपनिवेशवासियों ने इसका विरोध किया।

5) तीन दुर्घटनाएं – 1771 से 1772 ई० की अवधि में तीन छोटी-छोटी उल्लेखनात्मक दुर्घटनायें घटीं :-

a) बोस्टन के आक्रमण – बोस्टन शहर के नागरिक ब्रिटिश सैनिकों पर आक्रमण करने लगे। फलस्वरूप में अंग्रेज सिपाहियों ने दंगा करने वालों पर गोलियां चलायीं। इस घटना से उपनिवेशवासी उत्तेजित हो गये।

Scanned with CamScanner

Page – 9

b) गैस्पी का जलाया जाना – 1772 ई० में अमेरिका में चोरबाजारी रोकने के लिए एक शाही अंग्रेजी जहाज (Gaspee) गैस्पी भेजा गया। उपनिवेशों ने इसे जला डाला।

c) चाय कानून – चाय कानून द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारतवर्ष से सीधे अमेरिका चाय भेजने के लिए अनुमति दे दी। स्वतंत्रता – संग्राम के उपनिवेशों ने इसे ब्रिटिश सरकार की एक चाल समझा। जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी का चाय से लदा जहाज बंदरगाह पर पहुँचा, तो कुछ लोगों ने वहां के मूल-निवासियों के छद्म वेश में जहाज में प्रवेश कर चाय के 340 बक्सों को समुद्र में फेंक दिया।

6) ब्रिटिश सरकार के दमनकारी कार्य – बोस्टन टी पार्टी घटना से इंगलैंड में सनसनी फैल गयी। ब्रिटिश संसद ने तुरंत उपनिवेशों में शांति स्थापित करने के लिये पाँच दमनकारी कानून पास किये। इस संबंध में कुछ अन्य कार्य इस प्रकार भी किये गये –

a) बोस्टन बंदरगाह व्यापार के लिये बंद कर दिया गया, जिसके कारण वहाँ काम करने वाले हजारों मजदूर बेकार हो गये।

b) मैसाच्युसेट्स (Messachusetts) का राजनीति स्वराज्य ले लिया गया।

c) गेज (Gage) नामक एक सैनिक अधिकारी मैसाच्युसेट्स में गवर्नर नियुक्त किया गया। घोषणा की गयी कि बिना गवर्नर की अनुमति के लिये आमसभा नहीं की जा सकती।

7) अधिकारों का घोषणा-पत्र – मैसाच्युसेट्स के राजनीतिक अधिकार ले लिये जाने के कृत्य का सिवाय जार्जिया के सभी उपनिवेशों ने विरोध किया। इन उपनिवेशों ने मैसाच्युसेट्स का पक्ष लिया। इन उपनिवेशों की एक सभा अथवा कांग्रेस फिलाडेलफिया शहर में आयोजित की गयी। इस कांग्रेस ने अधिकारों का एक घोषणा पत्र तैयार किया। 4 जुलाई 1776 को सारे संसार के सामने यह कहा गया, "हम संयुक्त राज्य के एकत्रित प्रतिनिधि यह निर्णय लेते हैं कि ये संयुक्त राज्य के उपनिवेश स्वतन्त्र हैं तथा इन्हें स्वतंत्र होना चाहिये उनका ब्रिटेन के साथ कोई संबंध नहीं है।

Scanned with CamScanner

पत्रांक .... दिनांक ....

8) जार्ज तृतीय एवं अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम – जार्ज तृतीय का मत था कि ब्रिटिश संसद का उपनिवेशों पर कर लगाने एवं अन्य नियम बनाने का अधिकार है। उसके मंत्रियों ने उसके आदेशों का आँख मूँदकर पालन किया। मैसाच्युसेट्स का स्वायत्त शासन लेकर जनरल गेज को वहाँ का गवर्नर नियुक्त करते समय राजा ने बड़े हर्ष से अपने मंत्रियों को कहा, "दाँव लगा दिया गया है, उपनिवेश या तो विजयी हों या समर्पण करें। उन्हें पराजित करने के लिए सेना की चार टुकड़ियाँ पर्याप्त हैं।" उपनिवेश अपने आत्म सम्मान को दी गयी यह चुनौती किस प्रकार सहन कर सकते थे।

9) बौद्धिक कारण – उपनिवेशों में अंग्रेजी सरकार की कार्यवाहियों का विरोध करने के लिए अनेक संस्थायें स्थापित की गई। इन संस्थाओं में स्वाधीनता के पुत्र एवं स्वाधीनता की पुत्रियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। इन जनप्रिय संस्थाओं ने अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध काफी प्रचार किया। परिणामत: लोगों में बौद्धिक जागरण हो गया। इस संबंध में सैमुअल एडम्स का नाम उल्लेखनीय है। उसने पाया कि धनिक प्रतिक्रियावादी तथा यथास्थितिवादी हैं। इसके विपरीत उसने गरीबों को अपनी ओर मिलाने का कार्य किया। उसने 1761 से 1776 ई० तक विभिन्न अखबारों, बैठकों और कमेटियों द्वारा अपने प्रचारकार्य को जारी रखा। उसने यह बतलाया कि इंगलैंड उन्हें किस प्रकार दासता, दरिद्रता और दु:ख के धधकते दावानल में फँसाना चाहता है। अंतत: देशभक्तों ने यह नारा दिया कि – मुझे मृत्यु दो अथवा स्वतंत्रता।

—— X ——

Poonam Choudhury
Chief Coordinator
History
Nalanda Open University

Scanned with CamScanner